

16. सादगी की मूर्ति संत तुका राम

संत तुका राम एक प्रसिद्ध संत हुए हैं। उनकी धर्म परायणता की कीर्ति सुनकर छत्रपति शिवाजी ने उन्हें अपनी राजधानी में बुलाने के लिए सेवक भेजे। वे इस महान् संत का आदर-सम्मान करना चाहते थे तथा शिक्षा ग्रहण करना चाहते थे। शिवाजी ने सेवकों के साथ हाथी, घोड़े तथा पालकी आदि भेजे, ताकि संत जिस सवारी को पसंद करें, उसी पर बैठकर पधारें।

सेवकों ने तुका राम जी के पास जाकर अनुनय-विनय की—“भगवन्, आपको महाराज शिवाजी ने प्रणाम निवेदन किया है और अनुरोध किया है कि आप राजधानी पधारें। वे आपके दर्शनों के इच्छुक हैं।”

“ठीक है, मैं शिवा के स्नेह के कारण अवश्य आऊँगा।” तुका रामजी ने कहा।

“भगवन् आपके लिए हाथी, घोड़े और पालकी आदि की सवारी हमारे पास उपलब्ध है। आप जिस पर भी चाहें, बैठ सकते हैं।” एक सेत्रक ने कहा।

“नहीं,” तुका रामजी बोले, “मुझे चलने के लिए ईश्वर ने दो पैर दिए हैं। मैं इन निरीह जानवरों अथवा पालकी-वाहकों का भार क्यों बनू ? किन्तु शिवाजी को मेरी ओर से निवेदन करना कि मैं उनके लिए मंगल कामना करता हूँ। मैं अभी बिठुल (कृष्ण) के सेवा में हूँ। वे मुझे यहीं रहने दें।”

राजसेवक लौट गये। शिवाजी संत तुका राम की सादगी एवं प्राणी-दया की भावना से बहुत प्रभावित हुये; तत्काल संत की कुटिया में गए और चरणों का स्पर्श कर बोले—सचमुच आप महान् हैं। आपके प्राणी-प्रेम तथा स्वाभिमान से मैं बहुत प्रभावित हूँ।”

संत के दर्शन करके छत्रपति ने उन्हें स्वर्ण मुद्राओं से भरी एक थैली भेंट की।

तुका रामजी शिवाजी से स्नेह से बोले—“आप धर्म के रक्षक, राष्ट्र प्रेमी होकर मुझे इस माया के बंधन में क्यों डालते हैं ? यह तो मेरे योग और मुक्ति में बाधा देने वाली है। कृपा करके इस धन को लौटा ले जाएं।”

धन के प्रति ऐसी निःस्पृहता देखकर शिवाजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने संत को अपना गुरु धारण कर लिया। वे प्रायः पंढरपुर में उनकी झोंपड़ी में सत्संग करने आया करते थे।

* अभ्यास *

1. संत तुका राम में क्या गुण थे।
2. शिवाजी ने संत तुका राम से क्या अनुरोध किया और क्यों ?
3. संत तुका राम ने शिवाजी को क्या उत्तर दिया ?
4. शिवाजी ने संत तुका राम के चरण-स्पर्श क्यों किये और क्या वचन कहे ?

